بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in 27.01.2023 محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

निश्छलता एवं आज्ञाकारिता की मूर्ति कुछ बदरी सहाबियों के पवित्र जीवन चरित्र का वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 27 जनवरी 2023, स्थान मस्जिद मुबारक यइस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ.

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आज सहाबियों के वर्णन में से कुछ बयान करूँगा। पहला वर्णन हज़रत अबू लुबाबा इब्ने अब्दुल मुंज़िर रज़ी. का है, इनके बारे में कुछ अन्य रिवायतें मिली हैं। अल्लामा इब्ने अब्दुलबिर अपनी रचना अल-इस्तिआब में लिखते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ी. कुर्आन मजीद की आयत- وَاٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا وَّاٰخَرَ سَيِّئًا अर्थात- और कुछ दूसरे हैं जिन्होंने अपने गुनाहों का स्वीकार किया, उन्होंने अपने शुभ कर्म तथा अशुभ कर्म मिला जुला दिए, के बारे में फ़रमाते हैं कि यह आयत अबू लुबाबा रज़ी. तथा उनके साथ सात आठ आदमियों के बारे में है जो तबूक के युद्ध में पीछे रह गए थे। बाद में उन्होंने ख़ुदा के हुज़ूर तौबा की और अपने आपको खम्बों के साथ बाँध लिया, उनका शुभ कर्म तौबा था तथा उनका अशुभ कर्म जिहाद से पीछे रहना था।

मजमा बिन जारियः से रिवायत है कि हज़रत अनीस बिन क़तादा रज़ी. की शहादत के बाद उनकी पतनी हज़रत ख़नसा सुपुत्री ख़दाम के पिता जी ने मज़ीना क़बीले के एक आदमी के साथ उनकी शादी कर दी जो उनको पसन्द नहीं था, जिस पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनका निकाह तोड़ दिया जिसके बाद हज़रत अबू लुबाबा रज़ी. ने उनके साथ शादी की, जिनसे हज़रत सायब बिन अबू लुबाबा रज़ी. पैदा हुए। अब्दुल्लाह बिन अबी ज़ैद कहते हैं कि हम हज़रत अबू लुबाबा रज़ी. के साथ उनके घर गए तो वहाँ एक व्यक्ति फटे पुराने कपड़ों में बैठा था जिसने कहा कि मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना कि जो व्यक्ति कुर्आन करीम को सुन्दर स्वर के साथ नहीं पढ़ता, वह हममें से नहीं है।

फिर वर्णन है अबुज़्ज़ियाह बिन साबित बिन नुअमान रज़ी. का, एक रिवायत के अनुसार उनको बदर के युद्ध में पिंडली में पत्थर की नोक से घाव लगने के बाद वापस लौटना पड़ा। जिस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके लिए बदर के युद्ध की सम्पदा में से उनका भी भाग रखा।

फिर हज़रत अनसा रज़ी. मौला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वर्णन है। इमाम ज़ोहरी बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़ोहर की नमाज़ के बाद मिलने वालों को भेंट की अनुमति दिया करते थे और यह अनुमति आप स. से हज़रत अनसा रज़ी. लिया करते थे।

फिर वर्णन है हज़रत मुरसद बिन अबी मुर्सद रज़ी. का। इमरान बिन मनाह कहते हैं कि जब अबू मुर्सद रज़ी. तथा उनके पुत्र मुर्सद बिन अबी मुर्सद रज़ी. ने मदीने की ओर हिजरत की तो उस समय आप दोनों हज़रत उम्मे कुलस्म बिन हदम रज़ी. की तरफ़ ठहरे। मुहम्मद बिन उमर कहते हैं कि आप रज़ी. ओहद की लड़ाई में भी सम्मिलित हुए। हज़रत अबू मुर्सद कन्नाज़ रज़ी. हज़रत अबू हमज़ा रज़ी. से आयु में बराबर तथा दोस्त थे। हज़रत अबू मुर्सद रज़ी. और उनके बेटे हज़रत मुर्सद दोनों को बदर के युद्ध में शामिल होने का सामर्थ्य मिला।

फिर वर्णन है हज़रत अबू मुर्सद रज़ी. कन्नाज़ बिन हसनैन अलग़नवी का। रबीउल अव्वल 2 हिजरी को आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीस ऊँटों पर सवारों का एक दल अपने चचा हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब के नेतृत्व में मदीने से पूरब की ओर सैफ़ुल बहर की ओर रवाना फ़रमाया, जहाँ मक्का के मुख्या अबू जहल तथा उसके तीन सौ सवारों की सेना के साथ सामना हुआ। दोनों सेनाएँ लड़ाई के लिए पंक्तिबद्ध हो गईं कि उस क्षेत्र के मुख्या मजदी बिन उमरू अल-जहनी, महान प्रमुख मअदी बिन उमरू अल-जहूनी ने दोनों पक्षों में बीच बचाव करवा दिया और लड़ाई रुक गई। यह अभियान सिर्या हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब के नाम से विख्यात है। हज़रत अबू मुर्सद रज़ी. भी इस अभियान में शामिल थे। रिवायतों में प्रसिद्ध है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सबसे पहला झंडा हज़रत हमज़ा रज़ी. को बाँध कर दिया था और इस अभियान में हज़रत हमज़ा रज़ी. का झंडा हज़रत अबू मुर्सद रज़ी. उठाए हुए थे।

फिर वर्णन है हज़रत सलीत बिन क़ैस बिन उमरू रज़ी. का, हज़रत सलीत बिन क़ैस बिन उमरू रज़ो. का सम्बंध अंसार के क़बीले ख़िज़रज की बनू अदी बिन नज्जार नामक शाखा से था। मक्का की विजय के अवसर पर तथा हुनैन के युद्ध के अवसर पर अंसार के क़बीले बनू माज़न का झंडा हज़रत सलीत बिन क़ैस रज़ी. के पास था। 13 हिजरी तथा कुछ कथनाकारों के अनुसार 14 हिजरी के आरम्भ में हज़रत उमर रज़ी. की ख़िलाफ़त के दौर में मुसलमानों तथा फ़ारसियों के बीच जसर नामक युद्ध की घटना घटी। इस युद्ध में दो हज़ार ईरानी सैनिक मारे गए जबकि कुछ कथनों के अनुसार छः हज़ार ईरानी मारे गए। इसी प्रकार कुछ विद्वानों के अनुसार अट्ठारह सौ अथवा चार हज़ार मुसलमान शहीद हुए। इन शहीदों में हज़रत सलीत बिन क़ैस रज़ी. भी शामिल थे।

फिर वर्णन है हज़रत मजज़र बिन ज़ियाद रज़ी. का। हज़रत मजज़र बिन ज़ियाद रज़ी. ने इस्लाम से पूर्व के ज़माने में सुवेद बिन सामित की हत्या कर दी थी। बाद में हज़रत मजज़र रज़ी. तथा हज़रत हारिस बिन सुवेद सामत रज़ी. ने इस्लाम क़बूल कर लिया परन्तु हज़रत हारिस बिन सुवेद रज़ी. अपने पिता की

हत्या का बदला लेने की ताक में रहे। ओहद की लड़ाई में जब क़ुरैश ने मुड़ कर मुसलमानों पर हमला किया तो हारिस बिन सुवेद ने पीछे से हज़रत मजज़र रज़ी. की गर्दन पर वार करके उन्हें शहीद कर दिया। हज़रत जिब्रईल अलै. ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बताया कि हारिस बिन सुवेद ने धोखे से हज़रत मजज़र रज़ी. की हत्या कर दी है और आप स. का आदेश दिया कि आप स. हारिस को मजज़र रज़ी. के बदले में मार डालें। अतः आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश पर हज़रत अवीम बिन साअदः रज़ी. ने मस्जिद क़ुबा के द्वार पर हारिस बिन सुवेद की हत्या कर दी।

फिर रफ़ाअः बिन राफ़े बिन मालिक बिन अजलान रज़ी. का वर्णन है। रफ़ाअः बिन राफ़े बिन मालिक बिन अजलान रज़ी. अपने मौसेरे भाई मआज़ बिन अफ़रा रज़ी. के साथ मक्का पहुंचे तथा सनिया नामक पहाड़ी से नीचे उतरे तो एक व्यक्ति को देखा, वे आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम थे। हमने उन्हें नहीं पहचाना तथा उनसे पछा कि नबुव्वत का दावेदार व्यक्ति कहाँ है? आप स. ने फ़रमाया कि वह मैं ही हूँ। हमारे कहने पर आप स. ने हमें इस्लाम के बारे में बताया। हज़रत रफ़ाअः बैतुल्लाह की परिक्रमा के लिए चले गए और दुआ की, जिसके बाद उन्होंने कलमा पढ लिया और इस्लाम क़बूल कर लिया।

हज़रत रफ़ाअः कहते हैं कि एक दिन हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मस्जिद में बैठे हुए थे कि एक बदवी आदमी ने नमाज़ पढ़कर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सलाम किया। आप स. ने सलाम का जवाब दिया और फ़रमाया कि नमाज़ दोबारा पढ़ो। उसने नमाज़ पढ़ी और वापस आकर सलाम किया। आप स. ने उसे फिर दोबारा नमाज़ पढ़ने का फ़रमाया, इसी प्रकार दो तीन बार हुआ। अंततः उसने कहा कि मुझे नमाज़ सिखा दें। आप स. ने फ़रमाया कि जब तुम नमाज़ का इरादा करो तो पहले अल्लाह के आदेशानुसार वज़ू करो, फिर कुछ क़ुर्आन याद हो तो उसे पढ़ो, फिर संतोष के साथ रुकूअ करो और उसके बाद बिल्कुल सीधे खड़े हो जाओ, फिर ख़ूब संतुलन के साथ सजदा करो, फिर संतोष के साथ बैठो, फिर सजदा करो, फिर उठो। यदि तुमने ऐसा कर लिया तो तुम्हारी नमाज़ पूरी हो गई तथा यदि तुमने इसमें कुछ कमी की तो इतनी ही तुमने अपनी नमाज़ में कमी की।

फिर वर्णन है हज़रत उसैद बिन मालिक बिन रबीअः रज़ी. का। इब्ने इसहाक़ कहते हैं कि अबू सईद बिन मालिक बिन रबीअः रज़ी. बदर की लड़ाई में शामिल थे। जब अन्तिम आयु में उनकी दृष्टि चली गई तो उन्होंने कहा कि यदि आज मैं बदर के मैदान में होता और मेरी नज़र भी ठीक हाती तो मैं तुमको वह घाटी दिखा देता जहाँ स फ़रिशते निकले थे, मुझे इसमें तनिक भी शंका एवं भ्रम नहीं होगा। हज़रत अबू उसैद मालिक बिन रबीअः रज़ी. कहते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बैठे हुए थे कि बनू सलमा का एक व्यक्ति आया और कहा कि क्या माँ-बाप के मरने के बाद भी उनके साथ सुन्दर व्यवहार की आवश्यकता है? आप स. ने फ़रमाया- हाँ, उनके लिए दुआ करना, इस्तिग़फ़ार करना, उनके वादों को पूरा करना, उनके रिश्तेदारों से सहानुभूति के साथ सुन्दर व्यवहार करना, उनके मित्रों का सम्मान करना। इस प्रकार उनको भी सवाब पहुंचता रहेगा और उनकी मग़फ़िरत के सामान होते रहेंगे।

उसमान बिन अरक़म रज़ी. अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बदर के दिन फ़रमाया कि तुम्हारे पास जो युद्ध से हाथ आई सम्पत्ति है, उसे छोड़ दो तो हज़रत

अबू उसैद अस्साअदी ने आयज़ अलमर्ज़बान की तलवार रख दी और हज़रत अरक़म रज़ी. ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से वह तलवार मांग ली जिस पर आप स. ने वह तलवार उन्हें प्रदान कर दी।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल असद रज़ी. का वर्णन है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आप रज़ी. को पर्चम देकर बनू असद को पराजित करने के लिए डेढ़ सौ महाजिर और अन्सार के नेतृत्व में भेजा। आप रज़ी. ओहद तथा बदर के युद्धों में शामिल हुए। आप रज़ी. ओहद की लड़ाई में बाज़ू पर एक घाव लगने के कारण 3 जमादिल आख़िर 4 हिजरी को वफ़ात पा गए।

फिर वर्णन है हज़रत ख़लाद बिन राफ़े अज़्ज़र्क़ी रज़ी. का। हज़रत ख़लाद बिन राफ़े रज़ी. का सम्बंध अंसार के क़बीले बनू ख़िज़रज की अजलान नामक शाखा से था। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिस व्यक्ति को दो तीन बार नमाज़ दोबारा पढ़ने का निर्देश दिया था और फिर उसके कहने पर उसे नमाज़ का तरीक़ा सिखाया था, वे हज़रत ख़लाद बिन राफ़े रज़ी. ही थे।

फिर हज़रत अबाद बिन बशर रज़ी. का वर्णन है। खाईयों वाले युद्ध के अवसर पर उन्हें सम्पूर्ण सेवा करने का अवसर मिला। हज़रत अबाद बिन बशर रज़ी. ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश पर उस समय अबू सुफ़यान तथा उसके साथ कुछ मुशरिकों का सामना किया तथा उन्हें वापस जाने पर विवश कर दिया था। उस अवसर पर हज़रत अबाद बिन बशर रज़ी. ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़ेमे की सुरक्षा करने को भी तौफ़ीक़ पाई। हज़रत उम्मे सलमा रज़ी. बयान करती थीं कि अल्लाह तआला अबाद बिन बशर रज़ी. पर दया करे, वह रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबियों में से सबसे बढ़ कर आप स. के ख़ेमे के साथ चिमटे रहे तथा निन्तर उसकी सुरक्षा करते रहे।

फिर वर्णन है हज़रत हातिब बिन अबी बलतआ रज़ी. का। उनका देहान्त 65 वर्ष की आयु में तीस हिजरी में मदीना में हुआ और हज़रत उसमान रज़ी. ने उनके जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई। याक़ूब बिन उतबा कहते हैं कि हातिब बिन अबी बलतआ रज़ी. ने अपनी वफ़ात के दिन चार हज़ार दीनार और दर्हम छोड़े। एक बार आप रज़ी. का एक ग़ुलाम आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आप रज़ी. की शिकायत लेकर आया और कहा- हातिब अवश्य नर्क में दाख़िल होगा। आप स. ने फ़रमाया- तू ने झूठ बोला, वह कदापि उसमें दाख़िल नहीं होगा क्यूँकि वह बदर के युद्ध तथा हुदैबियः की सन्धि में शामिल हुआ था।

हुज़ूर-ए-अनवर ने अन्त में फ़रमाया कि अभी और कुछ बदरी सहाबियों के वर्णन हैं जो इन्शाअल्लाह बाद में बयान कर दूँगा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क करें-9781831652

अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान के विषय में जानकारो के लिए टोल फ्री नम्बर-18001032131